# एनविस न्यूज लेटर

## छत्तीसगढ़ पर्यावरण संरक्षण मंडल

अंक-पांचवा | हमारा संकल्प-स्वच्छ पर्यावरण | मार्च-2005

5 जून विश्व पर्यावरण दिवस का आयोजन

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में प्रदेश के मा. वित्त एवं वाणिज्य मंत्री, श्री अमर अग्रवाल, मा. वन एवं पर्यावरण मंत्री, श्री गणेशराम भगत मा., विधायक श्री राम सुंदर दास एवं मंडल के अध्यक्ष, श्री विवेक ढांड।

मंडल द्वारा 5 जून, 2004 को स्थानीय टाउन हाल, रायपुर में विश्व पर्यावरण दिवस का आयोजन माननीय मंत्री, वित्त, योजना, वाणिज्य कर एवं नगरीय विकास विभाग, श्री अमर अग्रवाल के मुख्य आतिथ्य एवं माननीय मंत्री, वन, आवास एवं पर्यावरण विभाग, श्री गणेशराम भगत की अध्यक्षता में किया गया। इस अवसर पर वनवासी संत गहिरा गुरूजी महाराज छत्तीसगढ़ पर्यावरण पुरस्कार वितरण समारोह, संगोष्ठी एवं प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर माननीय वन, आवास एवं पर्यावरण मंत्री, श्री गणेश राम भगत ने पर्यावरण की रक्षा को नैतिक दायित्व बताते हुये इसके संरक्षण का आह्वान किया। मंडल द्वारा विभागीय कार्यकलापों एवं उपलब्धियों व गतिविधियों पर आधारित प्रदर्शनी का उद्‌घाटन भी किया गया। इस अवसर पर मंडल के अध्यक्ष एवं सचिव, पर्यावरण व नगरीय विकास विभाग, श्री विवेक ढांड ने कार्यक्रम के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए वनवासी सन्त गहिरा गुरूजी महाराज छत्तीसगढ़ पर्यावरण पुरस्कारों की घोषणा की। श्री अनिल कुमार शर्मा, मुख्य अभियंता एवं विशेष कर्त्तव्यस्थ अधिकारी ने अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

राष्ट्रीय पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रम में कार्यशाला का आयोजन




कार्यशाला को सम्बोधित करते हुये मुख्य अतिथि माननीय मंत्री वन आवास, एवं पर्यावरण श्री गणेशराम भगत श्री अनिल कुमार शर्मा, मुख्य अभियंता एवं वि.क.अ.

वनवासी संत गहिरा गुरूजी महाराज छत्तीसगढ़ पर्यावरण पुरस्कार

शा. कन्या शिक्षा परिसर, परचनपाल, जि.-बस्तर के इको क्लब स्कूल को वनवासी संत गहिरा गुरूजी महाराज, छत्तीसगढ़ पर्यावरण पुरस्कार प्रदान करते हुए प्रदेश के मा. वित्त एवं वाणिज्य मंत्री, श्री अमर अग्रवाल, मा. वन एवं पर्यावरण मंत्री, श्री गणेशराम भगत, मा. विधायक श्री राम सुंदर दास एवं मंडल के अध्यक्ष, श्री विवेक ढांड।

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर मंडल द्वारा पर्यावरण के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य हेतु वनवासी संत गहिरा गुरुजी महाराज छत्तीसगढ़ पर्यावरण पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया। दो लाख रूपये का यह पुरस्कार संयुक्त रूप से चार संस्थाओं को प्रदान किया गया। ग्रीन कमांडो रायपुर, शासकीय कन्या शिक्षा परिसर, परचनपाल, जिला बस्तर, नगर पालिक निगम, जगदलपुर एवं मेसर्स ग्रासीम सीमेंट, रवान, जिला रायपुर को 50-50 हजार रूपये नगद, एक प्रशस्ति पत्र एवं ट्रॉफी से कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री अमर अग्रवाल, माननीय मंत्री, वित्त, योजना, वाणिज्य कर एवं नगरीय विकास विभाग एवं श्री गणेशराम भगत, माननीय मंत्री, वन, आवास एवं पर्यावरण विभाग ने सम्मानित किया।

मंडल द्वारा स्थानीय टाउन हाल, रायपुर में दिनांक 08 जून, 2004 को राष्ट्रीय पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रम के अंतर्गत पर्यावरण पर कार्य करने वाली प्रदेश की स्वय सेवी संस्थाओं के लिये मार्गदर्शन कार्यशाला का आयोजन प्रदेश के माननीय मंत्री, वन, आवास एवं पर्यावरण विभाग, छत्तीसगढ़ शासन के मुख्य आतिथ्य में किया गया। इस अवसर पर श्री अनिल कुमार शर्मा, मुख्य अभियंता एवं विशेष कर्त्तव्यस्थ अधिकारी ने राष्ट्रीय पर्यावरण कार्यक्रम के उद्देश्यों पर विस्तृत प्रकाश डाला। प्रो. एम. एल. नायक, जैविकी अध्ययन शाला, रविशंकर विश्वविद्यालय, रायपुर एवं श्री पवन गर्ग ने भी स्वयंसेवी संस्थाओं के प्रतिनिधियों को मार्गदर्शन दिया।

# विकास के साथ पर्यावरण संरक्षण

(श्री मुरलीधर पटेल, कक्षा–11वीं, जवाहर लाल नवोदय विद्यालय, माना कैम्प)
इको क्लब की अंतंजिला निबंध प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार विजेता

धरती माँ को प्रणाम, वंदनीय तरूओं को नमन,
सूर्य देवता को प्रणाम, जल देवता को नमन।

प्राकृतिक पर्यावरण के प्रति ऐसे अप्रतिम अनुराग की छाया अन्यत्र दुर्लभ है। इससे हमें अहसास होता है कि पर्यावरण हमारे लिए कितना महत्वपूर्ण है। यही मानव मात्र का सब कुछ है।

पर्यावरण का शाब्दिक अर्थ तो सरल है कि हम जहा रहते हैं वहां के वायुमंडल तथा अन्य जीव–जन्तु मिलकर पर्यावरण बनाते हैं। पर वास्तव में 'पर्यावरण' बहुत व्यापक शब्द है, इसका तात्पर्य उन भौतिक तथा जैविक अवस्था से है, जहां विभिन्न जीवधारी जन्म लेते हैं, पलते बढ़ते हैं तथा अपनी अनुकूलता को ग्रहण करते हैं। पर्यावरण और विकास का संबंध निश्चित रूप से घनिष्ठ है। भारत में पर्यावरण विज्ञान के जनक, प्रो. रामदेव मिश्र के अनुसार–"यदि हम मुट्ठी भर लोगों को सकल ऐश्वर्य की चीजें देने के बजाय सभी सामान्य मनुष्य को रोटी, कपड़ा और मकान के साथ–साथ स्वस्थ पर्यावरण प्रदान करें तो उसे सही अर्थों में विकास कहेंगे।

"वास्तव में हम सभी मानव, प्रकृति के ही पुत्र हैं" यह कथन हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का है। हमारे प्राचीन वेद–पुराणों में भी पर्यावरण को सदा उच्च स्थान प्राप्त रहा है। महापुराण में कहा गया है कि –

दश कुप समः, दशः वाणि समोः हृदः,
दश हृदः समः पुत्रो दशः पुत्रो समोः दुमः

पारिस्थितिक असंतुलन का प्रमुख कारण–"मानव के द्वारा औद्योगिक विकास तथा वैभव विलास के लिए प्राकृतिक संपदाओं का अनियंत्रित दोहन है।" आज मनुष्य के क्रूर हाथों के द्वारा खेली गई विनाश लीला के द्वारा कितने ही प्रजाति नष्ट होने के कगार पर हैं तथा कितने ही नष्ट हो चुके हैं। सभ्य मानव एक छोर से चलकर दूसरे छोर में पहुंच गया है, और वह जहां से भी गुजरा है, वह मरूस्थल हो गया है।

अतः आज सभी को यह सीख लेनी होगी कि–

"दूषित वायु, दूषित जल कैसे हो जीवन मंगल,
क्षुब्ध आयु क्षीण वायु, कैसे हो जन्म सफल।

हम देखते हैं कि प्रकृति हमारी आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम है, पर हमारी लालसाओं को नहीं। इस प्रकार आज पर्यावरण संरक्षण के लिए समग्र विकास की आवश्यकता है। अतः यह आवश्यक है कि विकास नियोजन में पर्यावरण घटक को विचारार्थ रखा जाना चाहिए तथा उसे विशुद्ध आर्थिक दृष्टि से देखा जाना चाहिए तथा विकास परियोजनाओं में पर्यावरण संरक्षण को उचित महत्व दिया जाये। हमारे अर्थ और विज्ञान को कल्याण के लिए नैतिकता का सहारा लेना चाहिए एवं सभी कोई यह सीख लें कि :–
पर्यावरण संरक्षण तभी संभव है।

मानव सभ्य हो या बर्बर, वह प्रकृति की संतान है उसका स्वामी नहीं।
आइये हम आज संकल्प लें कि हम अपनी प्राचीन थाती तथा प्राचीन ऋषियों की निम्नलिखित वाणी की रक्षा करे :–

भूमिः माताः पुत्रोअह पृथिव्या
नमोः मात्रे पृथ्वीः नमोः मात्र पृथ्वीः

यही हमारा सबसे सफल विकास है।